Airo International Research Journal
Volume XIII ISSN:2320-3714
January 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval No. 63012

गुरमत परम्परा एवं पुष्टिमार्गीय मंदिरों की संगीत परम्परा

डॉक्टर गुरशरन कौर
सीनियर असिस्टेंट प्रफ़ेसर
माता सुन्दरी कालेज फ़ोर वुमेन
दिल्ली यूनिवर्सिटी न्यू दिल्ली

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष एक धर्मप्रधान देश रहा है। इसके परिणाम स्वरूप समय–समय पर काल क्रमानुसार कर्म, ज्ञान और भक्ति पर आधारित अनेक धर्मों का यहां प्रचार एवं प्रसार रहा है। इन सब मार्गों में भक्ति मार्ग अत्यन्त सुगम और सरल रहा है। और अगर हम भक्ति की बात करते हैं तो मेरा अभिप्रायः सहज ही गुरबाणी संगीत की तरफ जाता है। उसका कारण यह है कि बचपन से लेकर अब तक हम जिस वातावरण में रहे, जिन संस्कारों को जीवन में अपनाया, आसपास प्रातः से संध्या तक हमारे कानों में जो शबद गूंजे, जनम–मरन, विवाह, वर्षोंउत्सव, समागम आदि सभी को गुरबाणी के माध्यम से ही ग्रहण किया। बचपन में जब राग का ज्ञान भी नहीं था तब भी अपने घर में अपने बुजुर्गों को रागों में ही कीर्तन स्तुतियाँ गाते सुना। दूसरी तरफ पुष्टिमार्गीय मंदिरों में हवेली संगीत की जानकारी हमें दिल्ली विश्वविद्यालय में डा॰ सत्यभान शर्मा से 2006 में रिफ्रेशर कोर्स के दौरान मिली। इसी से प्रभावित होकर लघु प्रबन्ध लिखने की प्रेरणा मिली। क्यों न गुरमत परम्परा व

हवेली संगीत परम्परा पर कुछ विचार विमर्श किया जाए। क्योंकि उनमें काफी ऐसी विशेषताएत्र हैं जो आपस में मिलती जुलती हैं।

गुरुनानक देव जी द्वारा रचित बाणी जपजी साहिब में 'ੴ का अर्थ ही है परमात्मा एक है। केवल नाम अलग–अलग है। गुरु ग्रन्थ साहिब में 8 गुरुओं एवं 16 भक्तों की बाणी निहित है। जो सर्व सांझे ग्रन्थ का अनूठा प्रमाण है। पूरे विश्व भर में केवल 'गुरु ग्रन्थ साहिब ऐसा ग्रन्थ है जिसने सच्चे अर्थों में मानव को निर्गुण बाणी के प्रवाह में मार्गदर्शन किया है। वैसे सभी धर्मों का अन्तिम लक्ष्य इसी एकत्व के अनुभव की प्राप्ति है।

'सत्यएक है पर उसकी प्राप्ति के मार्ग अनेक हैं। यही बात वेद में है– 'एक सद्विप्ता बहुध वदन्ति' अर्थात वह एक ही है और सद् विप्त उसे अनेक नामों से अभिहित करते हैं।

श्रवन कीर्तन विएणोः स्मरणं पाद सेवन।

अर्चन वन्दनं दास्यं वख्यामात्मनिवेदनम् ।।

सप्तम स्कंध में प्रहलाद द्वारा नवधा प्रकार की भक्ति बताई गई है। उपरोक्त प्रकार की भक्ति में श्रवण एवं कीर्तन को सर्वप्रथम रखा गया है अतः कीर्तन तथा श्रवण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। पुष्टिमार्ग में भी कीर्तन को विशेष महत्व दिया गया है।

गुरमत संगीत में जो कीर्तन की ही महिमा है।

'हर कीर्तन सुनै हर कीर्तन गावै तिस जन दुख निकट नहीं आवै।"[1]
कलजुग महि कीरतनु परधाना ।।[2]

गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ।।

इसी प्रकार जपुजी साहिब की पूरी पौड़ी श्रवण यानि सुनने के ऊपर आधारित है।

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ।। सुणिऐधरति धवल आकास।।[3]

सुणिऐ दीप लोअ पाताल ।। सुणिऐ पोहि न सकै काल ।।

श्रवण का बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त है। जिस प्रकार आचार्य वल्लभ जो कि पुष्टि मार्ग के संस्थापक माने गये हैं, उन्होंने कर्म और भक्ति का मेल कर दिया। उनके मत से गुहस्थ के धर्म श्री कृष्ण की इच्छा मात्र है। इसलिये इन्हें अवश्य करना चाहिए। आपके मत से नवधा भक्ति भगवान की अनन्य प्रेमावस्था का साधन है।गुरु ग्रन्थ साहिब में तो प्रेम के लिये उस प्रकार कहा गया है 'जिनि प्रेम कियो तिनि ही प्रभ पायो' प्रेम में भक्त भगवान के मिलन का भावात्मक आनन्द लेता है।

गुरुनानक देव जी ने तो सबसे उत्तम बात ही यही कही कि ग्रहस्थ में रहते रहते अपने ईष्ट को याद रखना है, ईश्वर की उपासना करनी हैएवं किरत करके यानि मेहनत करके, सच्ची कमाई करके परिवार का लालन–पालन करना है। दोनों परम्पराओं में कर्म और भक्ति को महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

गुरमत संगीत एवं हवेली संगीत में संगीत के तत्व भी आपस में मेल खाते हैं। पूर्ण गुरु ग्रन्थ साहिब मुख्य 31 रागों पर आधारित है और साथ ही 31 मिश्रित राग हैं।

पुष्टिमार्गीय संगीत की बन्दिशों में कुल 54 रागों का संकलन मिलता है। यद्यपि पुष्टिमार्गीय संगीत परम्परा अपने मूल रूप में ध्रुपद, धमार के मूल रूप में ही है। लेकिन काल प्रवाह के प्रभाव से कुछ बन्दिशों में व गाने के ढंग में काफी परिवर्तन आया है। पुष्टिमार्गीय संगीत में प्रबन्ध गायन का प्रचलन था। 'जयदेव का गीत गोविन्द' सूड प्रबन्ध का प्रमुख उदाहरण है। इसकी अनेक अष्टपदियां आज भी पुष्टिमार्ग के कीर्तनों में गाई जाती हैं। अतः

प्रबन्ध गायन की इस विध को आज भी पुष्टिमार्ग के मन्दिरों में देखा जा सकता है। जयदेव की एक अष्टपदी 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में भी संकलित है–

पारमादि पुरखोमनोपिमं सति आदि भाव रतं ।।[4]
परमदभुतं परकिति परं जदिचिंति सरब गंत ।।

गुरमत संगीत में भारतीय संगीत परम्परा का प्राचीन गायन स्वरूपयानि ध्रुपद धमार गायन पद्धति आज भी प्राप्त है। इसके अतिरिक्त आधुनिक गायन प्रकार जैसे ख्याल अंग से, ठुमरी अंग से, खुला कीर्तन गायन, अलंकारिक तत्वों का प्रयोग सभी तत्व भली–भाँति देखे जा सकते हैं। गुरमत संगीत में प्रयोग किए गए गायन रूप शास्त्रीय और लोक अंग के धारणी हैं। इसमें जहाँ शास्त्रीय काव्य के अन्तर्गत प्रयोग में आने वालेशास्त्रीय गायन रूपों को राग, स्थायी और अन्तरा में निबद्ध करने के संकेत दिये गये है, वहां लोक अंग की अलाहुणीयाँ, घोड़ियाँ आदि शैलियों को भी राग, स्थायी, अन्तरा आदि के अनुसार निबद्ध करने का आदेश दिया गया है। 'सोहले', 'छन्द', 'मुन्दाविनी' आदि देशी या लोक रूपों में भी प्रयुक्त किया। भाई अवतार सिंह, गुरचरण सिंह, भाई समुंद सिंह, प्रो॰ करतार सिंह, प्रिंसिपल सुखवंत सिंह, प्रो॰ दयाल सिंह, प्रो॰ गुरनाम सिंह इनकी पुस्तकों में व नेट में ध्रुपद धमार अंग से अनेकों शबदों का संकलन है जो आज तक सीना बसीना गाया जा रहा है। लयकारी करते समय खास बात का ध्यान रखा जाता है कि शबदों को इस प्रकार सजाना है कि उनके अर्थ में बदलाव न आये यानि कहां पर शबद में विराम लगाना है, कहां पर कमरूकना है, किस शबद पर ज्यादा जोर देना है ताकि मिठास कायम रहे क्योंकि मुख्य उद्देश्य बाणी का संचार है। इसी बात का अहसास मैंने सत्यभान शर्मा जी के गायन में भी रूबरू महसूस किया। उन्होंने लगभग 20 मिनट तक नोम तोम का आलाप करने की बजाया श्री गिरिजा राज धरन बर धीर गाइयै। श्री लाडलौ ललन कर गाइयै।

प्रातःकाल सर्वप्रथम शंखनाथ होता है। उसके बाद कीर्तनहिया भैरव राम की आलापचारी उसी राग में तालमुक्त होकर अनिबद्ध

गायन के रूप में श्री महाप्रभु बतलयाचार्य जी की स्तुति में पद बोलता है।

राग माला में 6 राग व 6 ताल क्रम से बदलते रहते हैं। राग के साथ ताल भी बदल जाता है। यह राग माला विशेष रूप से नाथद्वारा में गाई जाती है। शशीमाला में कांकरोली के कीर्तन पोथियों से पद मिलते हैं। इनमें राशियों के नाम अपने साहित्यिक को भी संजोए हुए हैं। माला के पदों में सप्ताह के सातों दिनों के नाम रहते है। प्रत्येक दिन बार का नाम अपने साहित्यिक अर्थ को भी धारण करता चलता है। माना जाता है कि ख्याल, ठुमरी शैली का स्त्रोत भी पुष्टिमार्गीय संगीत ही है।

इस प्रकार गुरमत संगीतमें दुपदे, त्रीपदे, चौपदे, पंचपदे, छहपदे, अष्टपदे, सोहले, वारा, पौड़ीया, छन्त, स्वये, पहरे, बारामाहा, थिति, रूती, चौबोले, गाया, फुन्हे इस प्रकार भी बाणी निहित है।[5] जैसे दो बारामाहा है–

एक गुरूनानक देव जी द्वारा रचित जो तुखारी राग[6] में है और गुरू अर्जुन देव जी द्वारा राग माझा में रचित है। पटी बाणी में हर अक्षर से शुरूआत कर के उपदेश दिया है दिन रैण बाणी, सतवार, सातो वारों से शुरूआत करके इत्यादि सारा काव्य साहित्यिक अर्थ में उपदेश ही देता है।

इस प्रकार गायन किये जाने वाली गुरमत संगीत की इस मौलिकशैली का प्रयोग संगीत की किसी भी प्रणाली में नहीं मिलता कुछ विद्वान रागी गुलदस्ता भी गाते चले आ रहे हैं जिसमें हर अन्तरे में राग व ताल बदलते हैं। गुरू साहिबानों की इस संगीत परम्परा की देन के लिये सम्पूर्ण जगत आभारी रहेगा।

जिस तरह पुष्टिमार्गीय संगीत में राग माला इत्यादि का वर्णन मिलता है तो वहीं गुरू ग्रन्थ साहिब में अन्त में राग माला पड़ी जाती है जिसमें रागों के नाम, पुत्र राग, रागिनी आदि का उल्लेख मिलता है। यहाँ पर यह कहना उचित होगा की भले ही गुरमत संगीत के शास्त्रीय गायनशैलियों के मूल अंश भारतीय संगीत से ही आये होगें लेकिन गुरू साहिबानो द्वारा मर्यादा पूर्वक प्रयोग करने पर गुरमत संगीत परम्परा ने एक अपनी अलग पहचान बना ली है। इस प्रकार शास्त्रीय अंग की महता दोनो पक्षों में साफ झालकती है। लेकिन एक बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सिक्ख जगत में शास्त्रीय अंग की षैलियों में तीन प्रकार का गायन प्रचार में आ रहा है और सारा विभ्व ज्ण्टण् छम्ज्ए च्ज्ज्ब्ए म्ज्ज्ब्इत्यादि चैनलों से प्रतिदिन गुरमत संगीत का रूब रू अनन्द ले रहा है। वहीं दूसरी ओर अगर हम बात करें तो सत्यमान शर्मा जी ने लैक्चर देते हुये बड़ा दुःख प्रगट किया कि आज कल सारी परम्परागत बातें लुप्त हो रही हैं जो कि काफी हद तक सही भी है। आज हम जब टी वी आनही करते हें तो देखते हैं कि आरकैसट्रासे प्रसतुतियाँ गाई जा रही है, आज लोग मेहनत करना ही नहीं चहते। ये कहते हुये उन्होंने बताया कि आज भी पुष्टिमार्गीय संगीत में नित्य सेवा क्रम में राग भैरव, देवगन्धार आदि से प्रारंभ करके बिलावल, टोडी व आसावरी आदि रागों से गुजरते हुये पूर्वी व कल्याण आदि के सहारे शाम तक पहुँचते हैं तथा उसके पश्चात अन्य रागों के व्यवहार के साथ–साथ अंत में षयन कराने के लिय आवश्यक रूप से बिहाग राग की स्वरलिपियों का प्रयोग होता है। सम्प्रदाय में भैरवी राग कभी

नहीं गाया जाता। इस का कारण यह बताया जाता है कि यहाँ भैरवीको हल्का और बाजारू राग माना जाता है इस सम्बन्ध में ठा॰ जयदेव सिंह जी के विचार में भैरवी एक सयक्त राग है तथा इसमें और रागों की अपेक्षा दूसरों को शीध्र प्रभावित करने की क्षमता है। इस राग से आत्म विस्भूतिशीध्र हो जाती है, तथा यह भी सम्भव है कि इसका इतना अधिक प्रभाव पड़े कि श्रोतामूर्च्छित हो जाये। ऐसे प्रभावशाली राग भैरवी में हो सकता है कि सम्प्रदाय के किसी आचार्य को मूर्च्छित अथवा अत्यधिक विह्वल कर दिया हो और तब उन आचार्य महोदय ने भैरवी को त्याज्य घोषित कर दिया हो। जितने राग जिस रूप में गाये जाते हैं उनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो सकता।

मीरा बाई के पद नहीं गाये जाते। इसका कारण मीरा को मर्यादा मार्गी कवियत्री बताया गया है। मीरा के साथ–साथ अन्य किसी भी मर्यादा मार्गी कवि की रचनाएँ नहीं गाई जाती। अष्ट छाप आदि के भी केवल वही पद गाये जाते हैं जिनका उल्लेख प्राचीन प्रणालियों में प्राप्त है। आजकल के किसी भी कवि की रचना चाहे वह कितना श्रेष्ठ क्यों न हो, नहीं गाई जा सकती क्योंकि इनका उल्लेख परम्परा अनुसार नहीं है।

गुरमत संगीत में सुबह आसा की वार से प्रारंभ होकर भैरव बिलावल,धनासरी, कल्याण, कानड़ा, रागों में सारा दिन कीर्तन का प्रवाह निरन्तर चलता रहता है। गुरबाणी में शबदों के उच्चारण पर खास ध्यान दिया जाता है। कलापक्ष की अपेक्षा भावपक्ष पर ही जोर दिया जाता है। शबदों का बदलाव बिल्कुल नहीं कर

सकते। अधिकतर जिस राग में बाणी दर्ज है उसी में ही गाने का आदेश है लेकिन इन नियमों का पालन आजकल पूरी तरह नहीं होता क्योंकि संगीत एक परिवर्तनशील कला है और इस परिवर्तन को आज के संगीत में भी बदलाव नजर आते हैं। जहां आसा कीवार का कीर्तन आसा राग में ही होना चाहिए वहां रागी भाई लोग बीच–बीच में कई अन्य रागों का प्रयोग भी कर लेते हैं।

गुरमत संगीत की चौकी–परम्परा शबद कीर्तन चौकी को हम दो तरीके से ले सकते हैं। एक अर्थ के अनुसार गुरमत संगीत, में कीर्तनी जत्थों को चौकी कहते हैं। 'चौकी' कम से कम चार व्यक्तियों की होती है। आजकल जत्थों में तीन लोग भी दिखाई देते हैं। इससे कम नहीं, अधिक चाहे कितने ही लोग हो, 'चोकी' में गा सकते हैं।[7] और दूसरा प्राचीन परम्परा में कीर्तन में चार अंग अवश्य माने जाते थे– शान, मंगलाचारण, शब्द गायन, पउड़ी। गुरु साहिबानों ने बाणी लिखते समय पहले रागों को स्थान दिया। उसका ही प्रमाण प्राचीन कीर्तन गायन परम्पराओं में मिलता है। इसमें पहले जिस राग में शबद गायन करना है। इसी राग में साजिंदे गाए जाने वाले सम्बन्धित राग में नगमा या धुन का वादन करते हैं, जिसके साथ तबला–वादक तबला–वादन द्वारा विशेष प्रकार के माहौल का सृजन करता है। यह परम्परा पुरातन कीर्तनियों में आज भी देखने–सुनने को मिलती है। इसके द्वारा जहाँ कीर्तन के लिये निश्चित सांगीतिक माहौल का सृजन करता है, वहीं तबला वादक अपनी महारत का प्रदर्शन करते हुए श्रोताओं को संगीत के विशेष वातावरण में प्रवेश कराता है।

2. मंगलाचरण– शबद कीर्तन चौकी में उस अकाल पुरख और गुरु सादिबान की स्तुति में प्रार्थना के रूप में बानी, श्लोक आदि का गायन किया जाता है। यह तालबद्ध रचना होती है। इसे डंडोत यानि दंडवत या वन्दना भी कहा जाता है। इसमें एकताल, चारताल, आड़ा–चौताल[8]आदि के विलम्बित ठेके का प्रयोग किया जाता है।

. शबद गायन– मंगलाचरन के उपरान्त रागात्मक और विषय के अनुकूल शबद गायन का क्रम आता है। इसमें ध्रुपद, ख्याल और गुरु साहिब में दर्ज गायन रूपों के अनुसार बाणी का गायन किया जाता है।

पउड़ी लगाना–शब्द कीर्तन चौकी के अन्त में 'गुरु ग्रन्थ साहिब' में दर्ज चारों में से समयनुसार श्लोकों का गायन करके पौड़ी लगाई जाती है। पौड़ी लगाने से भाव पौड़ी गायन करने की परम्परा है और जिसके साथ पौड़ी ताल का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार कीर्तन चौकी का विस्तार किया जाता है। गुरुनानक साहिब ने आसा की वार, सोदरू की चौकी और कल्याण की चौकी का प्रचलन किया। भाई काहन सिंह नामा ने गुरु अर्जुन साहिब द्वारा आसा दी वार दी चौकी, चरण कंवल की चौकी, सौदर की चौकी, कल्याण की चौकी– इन चार चौकियों का प्रचलन किया बताया है। परन्तु समय के साथ–साथ कीर्तन चौकियों की गिनती में वृद्धि होती गई है।[9] भाई वीर सिंह के अनुसार कीर्तन की पाँच चौकियां गुरमत, में निश्चित हैं। वर्तमान समय में कीर्तन चौकियों की गिनती आठ और पन्द्रह भी मानी जाती है।

1.तीन पहरे की चौकी

2. आसा की वार दी चौकी

3. बिलावल की चौकी

4. आनन्द की चौंकी

5. चरण कँवल की चौकी

6. सौ दर की चौकी

7. आरती की चौकी

8. कानड़े या कल्याण की चौकी

9. कीर्तन सौहिले की चौकी

इसके अतिरिक्त गुरमत संगीत की व्यवहारिक कीर्तन परम्परा सिक्खधर्म में आस्थाा रखने वाले लोगों के जीवन के साथ पूर्ण तौर पर जुड़ी हुई है। खुशी, गम के अवसरों पर परमात्मा के गुणों का गायन करने और उन्हें मन में बसाने की परम्परा है। सभी शबद रागबद्ध गाये जाते हैं। इसी तरह प्राणी के अकाल चले जाने पर जब तक शरीर है। 'मारु' राग में शबद और मारु की वार का गायन किया जाता है। बाद में देह को अग्नि देने के बाद'बडहंस' राग की अलाहुणिया गायन करने का आदेश है। इनके अतिरिक्तऋतु में बंसत। अगर कोई रागी सिंह बसंत राग में कीर्तन नहीं करता तो समझ लिया जाता है उसे 'गुरमत संगीत' का ज्ञान ही नहीं है। इस प्रकार सम्पूर्ण गुरमत संगीत का आधार शास्त्रीय संगीत ही है।

पुष्टिमार्गीय संगीत की नित्य सेवा में आठ झलकियों की सेवा होती है। कहीं–कहीं, 4 कहीं 5, कहीं 7 झाकियाँ होती है लेकिन जो प्रत्यक्ष में नही होती। उनकी भावना से भीतर ही सेवन हो जाती है और इस प्रकार सेवा विधान में कोई अन्तर नहीं होता। इन आठ झांकियों की कीर्तन सेवा पूर्ण करने के लिए गो॰ श्री विट्ठल नाथ जी ने अष्ट सखाओं में से प्रत्येक

को एक–एक झांकी सुपुर्द की थी। झांकियों का क्रम निम्नलिखित है–

1. मंगला –परमानन्द
2. श्रृंगार –नंददास
3. ग्वाल – गोबिंद स्वामी
4. राजभोग –कुम्भनदास
5. संध्याभोग – चर्तुभुजदास
6. संध्या आरती –छीतस्वामी
7. शयन – कृष्णदास

नाथ द्वारा में आज भी श्री कृष्ण के लिए इसी भाव से 8 कीर्तनियां कीर्तन करते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि सभी कीर्तनियां सभीझांकियों में साथ–साथ गाते हैं। एक स्पष्टीकरण आवश्यक है कि जब–जब भगवान के दर्शन खुलते है। कीर्तन प्रारंभ होता है तथा जब दर्शन बंद हो जाते हैं। लेकिन यथार्थ में ऐसा नहीं है। कीर्तनियों का कार्य मंगला के दर्शन खुलने से पहले ही आरंभ हो जाता है और शयन के दर्शन बन्द होने के बाद तक चलता रहता है। ऋतुओं के अनुसार रागों का गायन भी होता है। जैसे मल्हार ऋतु में मल्हार राग, बसंत में बसंत राग, ग्रीष्म में सांरग इत्यादि।

वर्ष में और उत्सव भी मनाए जाते हैं। जिनमें शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन रहता है। और ताल के लिये पखावज का प्रयोग होता है और जिसमें बड़ी और छोटी तालों का प्रयोग होता है। जैसे चारताल, धमार, आड़ा चारताल, आदि ताल, झपताल, सूलताल, झूमरा इत्यादि। इस प्रकार दोनों परम्पराओं में शास्त्रीय संगीत के अवयव भरपूर विद्यमान है। जहां

पर प्रचार की बात है तो गुरमत संगीत का प्रचार आज लगातार चल रहा है। पाश्चात्य संगीत का प्रभाव समय के साथ–साथ गुरमत संगीत में भी दिखाई देता है जैसे गिटार का प्रयोग, की बोर्ड का प्रयेाग आदि कीर्तन में नहीं होता था। आजकल हर जगह सुनने में आता है लेकिन मूल रूप आभी भी विद्यमान है। जहां पुष्टिमार्गीय संगीत की बात करे तो यह लुप्त सा हो गया है। क्योंकि आमतौर पर मन्दिरों में, जागरण में आम धुनों या फिल्मी धुनों के ऊपर ही प्रस्तुतियाँ सुनाई देती है। लेकिन विख्यातशास्त्रीय व उपशास्त्रीय संगीत के गायक आज भी भजन इत्यादि की बन्दिशों को रागों में ही बांध कर गाते हैं। तो ऐसा कदापि नहीं कह सकते कि पुष्टिमार्गीय संगीत पूरी तरह लुप्त हो रहा है। लेकिन इसमें अभी भी प्रचार की आवश्यकता है। पुष्टिमार्गीय संगीत में श्री कृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन है या यूं कह सकते हैं कि सर्गुण स्वरूप का निर्वाह है। गुरु ग्रन्थ साहिब में केवल निर्गुण स्वरूप की ही बात की गई है तभी गुरुनानक देव जी ने 16 भक्तौं की बाणी को गुरू ग्रन्थ साहिब में स्थान दिया है। गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज बाणी ही हमारी गुरु एवं मार्गदर्शक है।

पाद टिप्पणियां :

[1] गुग्रसःअंग–190

[2]गुग्रसःअंग–1075

[3]गुग्रसःअंग–2

[4]गुग्रसःअंग 526

[5] गुरनामसिंग – गुरमत संगीत प्रबंद ते प्रसार पृ 59

[6]गुग्रसःअंग 526

[7] गुरमत संगीत की चौंकी – गीता पैंटल पृ 124

[8] भाइ काहन सिंग नाभा –महान कोष पृ 332

[9] भाइ काहन सिंग नाभा –महान कोष पृ 449

परोः सत्यभानशर्मा लैकचर ।ज कमचज वि उनेपब पद .रंद 2006

Airo International Research Journal
Volume XIII ISSN:2320-3714
January 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval No. 63012